Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN: 2581-6241 Volume - 2, Issue - 5, Sept-Oct – 2019
Bi-Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 1.847
Received on : 19/09/2019 Accepted on : 02/10/2019 Publication Date: 30/10/2019

प्राचीन हिन्दू ग्रंथों में मद्यपान द्वारा मनुष्य के होने वाले पतन एवं आसुरी प्रवृतियों के उदय का वर्णन

[1] सौरभ कुकरेती , [2] डॉ. संजय सिंह
[1] शोधार्थी [2] सहायक प्राध्यापक (शोध निर्देशक)
योगविज्ञान विभाग, पतंजलि विश्वविद्यालय हरिद्वार
Email: [1] sourabhkukreti@zoho.com, [2] sanjay.singhyoga@gmail.com

सार संक्षेप : सनातन धर्मं में पञ्च महापातकों का अनेक स्थानों पर वर्णन किया गया है एवं सुरा पान का समावेश सभी स्थानों पर पातक कर्मो में किया गया है, पातक कर्म वह होते हैं जिनसे व्यक्ति का अधः पतन होता है, तथा कई बार जन्मो बाद व्यक्ति को पुनः अपनी पूर्व स्तिथि प्राप्त होती है, अतः बारम्बार शास्त्रों में पातक कर्मो से दूर रहने का मार्ग निर्देश दिया गया है

कुंजी शब्द : मद्यपान, सूरा, पञ्च पातक, पातक कर्म.

परिचय :

मनुष्य अपने जीवन को दिन प्रति दिन अधिक सुख दायक बनाए के लिए नित नयी उन्नत जीवन शैली की खोज में लगा रहता है, इसी क्रम में नित्य भौतिक सुख एवं विलासिता के प्रयोग उसको अपनी ओर खींचते रहते हैं , एवं कई बार वह उसी प्रकार व्यसनों की भेंट चढ़ जाता है जैसे पतंगे रौशनी की चमक से प्रभावित हो कर रात भर अपनी स्वयं की मृत्यु के साथ नर्तन करते हैं .

साहित्य अवलोकन :

मूल रूप से पञ्च पातकों का वर्णन जो हिन्दू धर्मं में प्रकारांतर से अनेक स्थानों पर मिलता है।

ब्राह्मण हत्या

सुरा पान

स्तेय अथवा चौर्य

गुरु पत्नी गमन

एवं उपरोक्त पतितों का संग करना मनु स्मृति के अनुसार निम्न कर्म महापातकों की श्रेणी में आते हैं।

ब्रह्महा च सुरापश च स्तेयी च गुरुतल्पगः

एते सर्वे प्रथग ज्ञेया महापातकिनो नराः (मनु स्मृति ९-२३५)

अर्थात ब्रह्मा हत्या, सुरा पान, किसी के धन की चोरी एवं गुरु पत्नी गमन यह सभी महा पातक कर्म हैं।

एक अन्य स्थान पर पुनः मनु स्मृति पुष्टि करती है।

ब्रह्म हत्या सुरापानं स्तेयं गुर्वंगनागमः

महान्ती पाताकान्याहू: संसर्गश्च अपि तै: सह (मनु स्मृति ११-५४)

ब्रह्म हत्या, सुरा पान, ब्राह्मण के धन का हरण, गुरु पत्नी गमन एवं उपरोक्त कर्मो में रत पतित लोगों का सान्निध्य यह पांच प्रकार के महापातक कर्म हैं।

ब्रह्म उज्झता वेदनिन्दा कौटसाक्ष्यम सुहृदृधः

गर्हित अनाघ्योर जग्धिः सुरापानसमानि षट (मनु स्मृति ११-५६)

वेदों का विस्मरण, वेद निंदा, असत्य साक्ष्य प्रस्तुत करना, मित्र के साथ घात करना, निषिद्ध आहार करना व अभक्ष्य भोजन करना यह छः कार्य सुरापान के सामान ही निंदनीय हैं ।

कुलार्णव तंत्र में श्रीपराप्रसाद मंत्र की साधना व महिमा बताते हुए निम्न श्लोक में बताया गया है की किस प्रकार यह मंत्र पाप कर्मो से मुक्ति दिलाने में सक्षम है. तथा यहाँ भी पाप कर्मो में मदिरा पान का उल्लेख पाया जाता है।

अगमोक्तेंन विधिना क्रम्पुजापुर: सरम

श्री प्रासाद परामंत्रम शतमष्टोतरम जपेत

मुच्यते ब्रह्महत्यादिमहापापेश्वा पंचभि: (कुलार्णव तंत्र ३:१०२)

प्रस्तुत आगम में निर्दिष्ट विधि अनुसार क्रमिक रूप से पूजा में पारायण रहना चाहिए, श्री परा प्रासाद मंत्र कम से कम अष्टोत्तर शत जाप करना चाहिए, इस के महाफल प्रद जप से ब्रह्म हत्या, सुरा पान, स्तेय व गुरुपत्नीगमन जैसे महापातकों से मुक्ति मिल जाती है।

कालिदास रचित संस्कृत साहित्य के एक ग्रन्थ में इस रहस्य को एक रोचक कथा द्वारा समझाया गया है। आज जो शराब बोतलों में रखी जाती है,पहले यह घड़ों में रखी जाती थी।एक गणिका सिर पर घड़ा (सुरा पात्र) रखे जा रही थी। मार्ग में खड़े जाँचकर्त्ता राजपुरुष (सिपाही) ने गणिका से पूछा-इस घड़े में क्या लिये जा रही हो? गणिका ने उत्तर दिया-हमारा पेय पदार्थ है।

राजपुरुष ने कहा-सही-सही बताओ कि इसमें क्या है?

गणिका ने कहा-सही-सही पूछना चाहते हो तो सुनो-

मदः प्रमादः कलहश्च निद्रा, बुद्धिक्षयो धर्मविपर्ययश्च।
सुखस्य कन्था दुःखस्य पन्थाः, अष्टावनर्थाः सन्तीह कर्के।।

अर्थात् इस सुरापात्र में मैं आठ अनर्थ एक साथ लिये जा रही हूँ,वे हैं-

१.मद (नशा),

२. प्रमादः (आलस्य),

३. कलहः (लड़ाई-झगड़ा),

४. निद्रा (नींद),

५. बुद्धिक्षयः (बुद्धि का नाश),

६. धर्मविपर्यय (अधर्म और अनर्थ का मूल),

७. सुखस्य कन्था (सुख का विनाश) और
८. दुःखस्य पन्था (दुःखदायक मार्ग)।

अर्थात् इन सबकी प्रतीक पेयवस्तु है इसमें और उसका नाम है-'मदिरा' अर्थात् 'शराब' ।यह मदिरा इतने सारे दुःखों-अनर्थों को उत्पन्न करती है।

महाभारत की कथानुसार दैत्यगुरु शुक्राचार्य भी मद्यपान की बुरी प्रवृत्ति से ग्रस्त थे, उनका एक शिष्य कच जो की स्वयं देवता था तथा देवगुरु ब्रहस्पति का पुत्र था, उनसे मृत संजीवनी विद्या सीख रहा था , अन्य सभी दैत्य शिष्य इस बात से बहुत कुंठित एवं रुष्ट थे, उन्होंने कई बार कच की हत्या का प्रयास किया किन्तु मृत संजीवनी विद्या के कारण गुरु शुक्राचार्य ने उसे हर बार पुनरजीवित कर दिया , फिर एक बार सब दैत्य शिष्यों ने कच की हत्या की और उसके शरीर के अंशो को बारीक़ मथ कर शुक्राचार्य की सूरा में मिला दिया, जब शुक्राचार्य को सुरापान के बाद इस बात का आभास हुआ और उन्होंने मृत संजीवनी विद्या द्वारा कच को पुनर्जीवित करने का प्रयास किया तो उनके उदर के भीतर से ही आवाज़ आने लगी, उनके आदेश पर कच उनका उदर चीर कर बहार निकला एवं फिर उसने मृत संजीवनी विद्या द्वारा अपने मृत गुरु शुक्राचार्य को पुनर जीवित कर दिया,

इस घटना के बाद गुरु शुक्राचार्य बहुत क्षुब्ध हुए और उन्होंने स्वयं को एवं अपनी सुरापान की प्रवृत्ति को बहुत धिक्कारा ,

यो ब्राह्मणो अद्य प्रभृतीह कश्चिन्मोहात्सुरां पास्यति मन्दबुद्धिः।

अपेतधर्मो ब्रह्महा चैव स स्यादस्मिँल्लोके गर्हितः स्यात्परे च ॥

जो मुर्ख ब्राह्मण मद्य पान करता है उसको धर्म हीन और स्वकुलनाशी जान कर इस लोक में तथा इसके बाद के लोको में भी सदैव के लिए त्याग देना चाहिए

रामायण के लंका कांड में जब कुंभकर्ण को जगाया जाता है व जब रावण उसको परिस्तिथि से अवगत कराता है की किस प्रकार लंका एवं श्री राम की सेना के बीच युद्ध चल रहा है तथा कैसे शूर्पनखा के अपमान का बदला लेने के लिये उसने सीता का हरण किया, तो सत्व बुद्धि कुम्भकर्ण उसको धिक्कारता है, लेकिन मदिरा एवं मॉस के भक्षण के बाद वही कुम्भकर्ण युद्ध को उद्धृत हो जाता है, अर्थात सूरा उसकी बुद्धि एवं विवेक को हर लेती है.

सुनि दसकंधर वचन तब कुभाकरण बिलखान

जगदम्बा हरी आणि अब शठ चाहत कल्याण (६२ लंकाकांड)

भल न कीन्ह तैं निशिचर नाहा अब मोहि आई जगाएही काहा

अजहू तात त्यागी अभिमाना भजहु राम होइही कल्याणा

तब रावण के वचन सुनकर कुम्भकरन दुखी हो कर बोला अरे मुर्ख जगद्जननी जानकी को हर कर अब तू कल्याण चाहता है?

हे राक्षस राज तूने अच्छा नहीं किया, अब आ कर मुझे क्या जगाया, हे तात अब भी अभिमान छोड़ कर श्री राम जी को भजो तो कल्याण हो,

राम रूप गुण सुमिरत मगन भयहु छन एक

रावण मागेउ कोटि घट मद अरु महिष अनेक (६३ लंकाकांड)

महिष खाई करी मदिरा पाना गरजा वज्राघात समाना

कुम्भकरन दुर्मद रन रंगा चला दुर्ग तजि सेन न संगा

श्री रामचंद्र जी के रूप और गुणों को स्मरण कर के वह एक क्षण के लिए प्रेम में मग्न हो गया फिर रावण ने करोड़ों घडे मदिरा और अनेकों भैंसे मंगवाए, भैंसे खा कर और मदिरा पी कर वह वज्राघात के सामान गरजा मद से चूर रण के उत्साह से पूर्ण कुम्भकर्ण किला छोड़ कर चला तथा सेना भी साथ नहीं ली।

ऋग्वेदमें मद्य का वर्णन

वस्तुतःधर्मशास्त्रों ने जो भी कृत्य-अकृत्य निर्धारित किया है, उसके केंद्र में समाजहित ही है। समाज के अहित को रोकने के लिए मर्यादा निर्धारित कर पाप-पुण्य का मार्गनिर्देश किया। इसमें स्वास्थ्य को भी ध्यान में रखा गया, क्योंकि स्वस्थ व्यक्ति से ही स्वस्थ समाज और स्वस्थ राष्ट्र का निर्माण संभव है। चूंकि एक कुकर्म से अनेक कुकर्मों का मार्ग प्रशस्त हो जाता है, इसीलिए एक मांसाहारी भिक्षु से प्रश्नपरक एक श्लोक में पूछा गया है।

भिक्षो!मद्य-निषेवणम्प्रकुरुषेकिं तेन मद्यं विना, मद्यं चापि तव प्रियं प्रियमहो वारांगनाभि: सह।
वेश्याप्यार्थरुचि: कुतस्तव धनं द्यूतेन चौर्येण वा, एतावानपि संग्रहोस्ति भवतो नष्टस्य कान्या गति:॥

हे भिक्षुक! क्या मांस खाते हो और शराब नहीं पीते हो? शराब पीते हो तो क्या वेश्याओं की संगति नहीं है? वेश्याओं की संगति है तो धन कहां से आता है चोरी या जुए से? यदि इतने दुर्गुण हैं तो फिर धनादि के नाश होने पर तुम्हारी क्या गति होगी तथा मरने के बाद क्या तुम्हें उत्तम गति मिलेगी?

सप्त मर्यादा कवय: तरक्षुः तासामेकामिदभ्यंहुरो गात(ऋक10: 5:6)

ऋग्वेद (7:86:6) ने भी इसकी भरपूर भर्त्सना की है और आदिकाल से ही इसे हेय माना जाता रहा। सात मर्यादाएं चोरी, व्यभिचार, ब्रह्महत्या, भ्रूणहत्या, सुरापान, एक ही दुष्कृत की बार-बार आवृत्ति एवं किसी पापमय कृत्य के विषय में झूठ बोलना ये वेदों द्वारा निर्धारित मर्यादाएं हैं जिनका उल्लंघन कोई व्यक्ति भूल कर भी ना करे यदि वह स्वयं का हित चाहता हो।

उपसंहार:

आधुनिक मनुष्य अपनी जीवन शैली को प्रयोगात्मक ढंग से जी रहा है एवं स्थापित मान्यताओं एवं जीवन शैली से दूर हो चूका है, विकास के साथ नवीनता का स्वागत होना चाहिए, किन्तु हमें हमारों पुरातन ग्रंथों में झांक कर वहां से प्राप्त होने वाले जीवन सूत्रों को भी मूल्यवान रत्नों की तरह चुन लेना चाहिए , क्योंकि यदि हम उन सूत्रों से लाभ ले लेंगे तो हमारा जीवन सफल हो जायेगा , अन्यथा व्यर्थ के प्रयोग करने के बाद, अपने जीवन की हानि होने पर चेत कर कोई लाभ न होगा.

सन्दर्भ ग्रन्थ:

१. मनु स्मृति (९:२३५) पृष्ठ संख्या ३५७, नवल किशोर प्रेस लखनऊ , १९१७ प्रथम संस्करण
२. मनु स्मृति (११:५४) पृष्ठ संख्या ४०७, नवल किशोर प्रेस लखनऊ , १९१७ प्रथम संस्करण
३. मनु स्मृति(११:५६) पृष्ठ संख्या ४०७, नवल किशोर प्रेस लखनऊ , १९१७ प्रथम संस्करण
४. कुलार्णव तंत्र (३:१०२)
५. रामचरितमानस (लंकाकांड, ६२) पृष्ठ संख्या ९३०, गीता प्रेस, गोरखपुर, ४०वां संस्करण
६. रामचरितमानस (लंकाकांड, ६३) पृष्ठ संख्या ९३१ गीता प्रेस, गोरखपुर, ४०वां संस्करण
७. ऋगवेद (१०: ५.६)